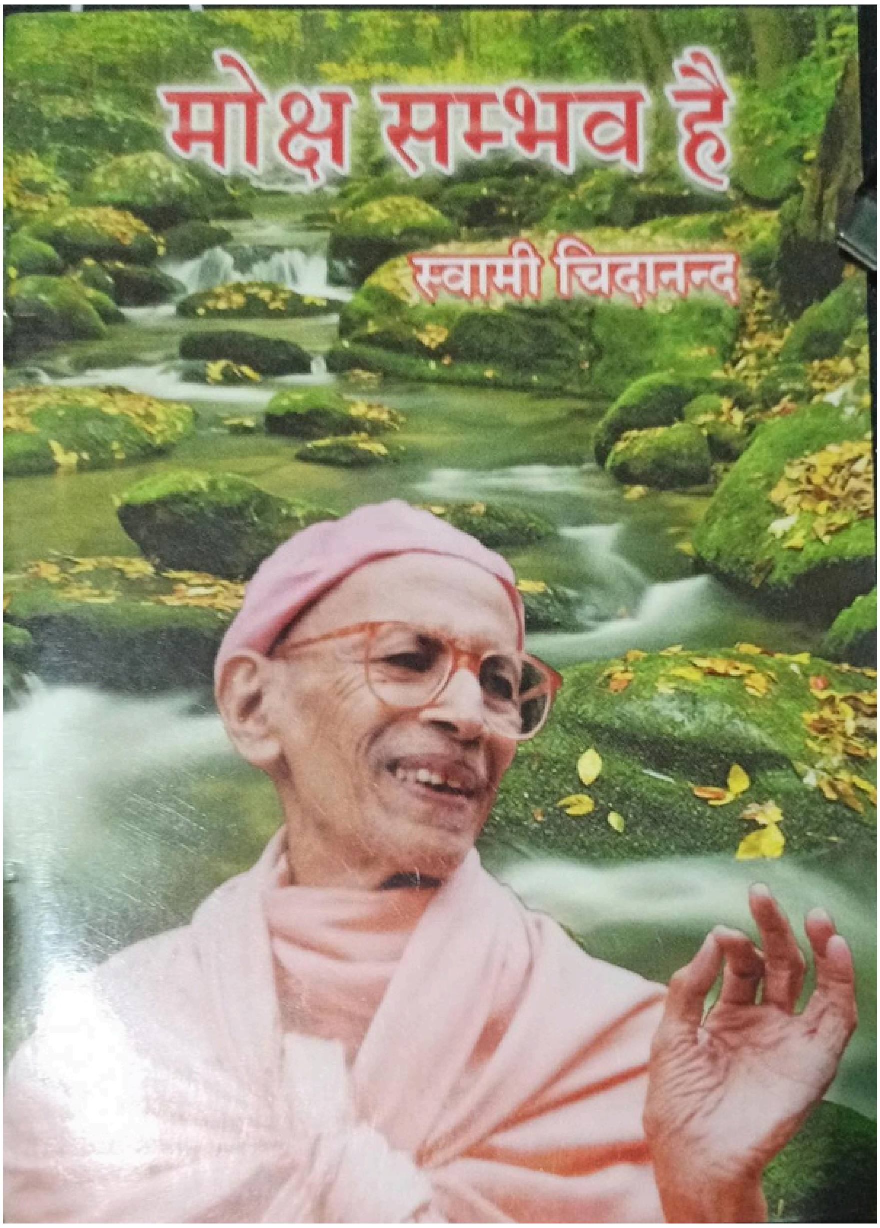




मोक्ष सम्भव है   !

श्री स्वामी चिदानन्द

अनुवाचदका
श्रीमती गुलशन सिदेव

प्रकाशक
द चिवाइन लाइफ सोसायटी
पत्रालय : चशवानन्दनगर-२४९१९२
चिला : चटहरी-गढ़वाल,उत्तराखण्ड(चहमालय),भारत
www.sivanandaonline.org, www.dlshq.org

प्रथम चहन्दीसंस्करण: २००४
चितीय चहन्दीसंस्करण: २०१६
तृतीय चहन्दी संस्करण : २०२२(५०० प्रचतयाँ)

HC 50
ISBN 81-7052-170-X

PRICE: 35/-

'दचिवाइनलाइफसोसायटी , चशवानन्दनगर'के चलए
स्वामी पद्मनाभानन्दिाराप्रकाचशततथाउन्हीं ंके िरा'योग-वेदान्त
फारेस्टएकिोमीप्रेस,पो.चशवानन्दनगर-२४९१९२,
चिला चटहरी-गढ़वाल, उत्तराखण्ड' में मुचित।
For online orders and Catalogue visit: disbooks.org

प्रकाशकीय

पूज्य गुरुदेव श्री स्वामी चशवानन्द िी महारिा के साथ श्री स्वामी चिदानन्द िी की प्रथम भेंट और आश्रम में उनके शुभागमन की षष्ट्यब्दि के शुभ अवसर पर उनके िारा ब्राह्ममुहूतत में ध्यानोपरान्त चदये गये प्रविनों ंकी शृंखला आपके समक्ष प्रसुतुत करते हुए हमें अपार हषत हो रहा है।

मंगल संयोगवश आश्रम में पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द िी महारिा का शुभागमन बुद्ध ियन्ती के चदवस पर हुआ था। भगवान् बुद्ध की ही भाँचत स्वामी िी महारिा का िीवन दया और त्याग की प्रचतमूचतत है। स्वामी िी महारिा एक अत्यन्त ताब्दिक चशक्षक भी हैं। वे सतत स्मरण कराते रहते हैं चक मोक्ष और भगवद्-साक्षात्कार हमारा िन्मचसद्ध अचिकार है। "आप इसी के चलए बने हैं" -ऐसा वे आश्वासन देते हैं और उनकािीवन भी इस सत्य का एक िीवन्त दृष्टान्त है चक मोक्ष सम्भव है।

१९ मई २००३

–द डिवाइन लाइफ सोसायटी

डवषय-सूची

१. क्या मोक्ष सम्भव है?

गुरुकीचदव्य कृपा तथा यथेच्छ आशीवातद आपकी हाचदतक कामनाओं ंको पूणता प्रदान करें, आपके िीवनके परमलक्ष्य को पूणत करे चिससे आप इसी िीवन में, इसी शरीर में मोक्ष को प्राप्त कर लें। दु:ख,शोकऔरमोह का आपके चलए कोई अथत न रहे। बन्धन का कोई अथत न रहे और मृतुयु का कोई अथतनरहे।यहीलक्ष्य है, यही उद्देश्य है। इस प्रकार आप अपनी शाश्वत प्रकृचत के बोि तथा िागरूकता कीअवथथामेंप्रचतचित हों,ं यही प्राथतना है।

इस सम्भावना की घोषणा और पुनरावृचत्त िमतग्रन्ों ं में पुनुः पुनुः की गयी है। इसी िन्म में मोक्ष प्राप्त करना और'िीवनुमुि'बननामनुष्यकापरमलक्ष्यहै।क्यायहसम्भवहै?हमइसकासिीाउत्तरनहीं ं दे सकते;परन्तुयहचनचितरूपसेकहसकतेहैंचकयहअसम्भवनहीं ं है।यहीआश्वासनपयातप्तहै। इसका अथतहैचकयहसम्भवहै;परन्तुआवश्यकनहीं ंचकयहउतनासरलहोचितनाएकअच्छाचमष्टान्न खाना। चमष्टान्नखानाआसानहोसकताहै;परन्तुउसकोतैयारकरनेकेचलएपररश्रमआवश्यकहै।

सभी प्रबुद्धिनों ं ने स्वयं मोक्ष प्राप्त करके घोषणा कर दी है चक मौस सम्भव है। िो एक व्यब्दि ने प्राप्त चकयाहै,उसेसभीप्राप्तकरसकतेहैं।इसीकेचलएतोआपबनेहैं।

२. चदव्यता का अनुसरण करें

उस परम चदव्य पुरुष को, शाश्वत एवं असीम सावतभौचमक परमात्म-ति को, अनाचद-अनन्त, बन्धन-रचहत, अपार, सब्दिदानन्द-स्वरूप, आध्याब्दत्मक सत्ता को वन्दन-चिसकी प्राब्दप्त मनुष्य को सब प्रकार के दु:ख, ददत और शोक से मुि कर देती है। परमानन्द की अनुभूचत होने पर वह सदा के चलए उसी आनन्द में ब्दथथत हो िाता है।

हमारे पूवतिों ंने उस परम अनुभूचत को प्राप्त करने की तीव्र आकांक्षा और उसकी अनुभूचत की बहुत प्रशंसा और संसुतुचत की है। यह आकांक्षा अथवा मुमुकुषुत्व मन में बसी उन अगचणत इच्छाओं ंकी भााँचत नहीं ं है चिन्ें आप प्राप्त करना िाहते हैं। यह इच्छा चकसी वसुतु को प्राप्त करने की नहीं ंहै; क्योंचक एक व्यब्दि इस महान् अनुभव को प्राप्त करने योग्य तभी बन सकता है, िब वह परमात्मा िारा उत्पन्न की गयी सभी वसुतुओं ंको प्राप्त करने की इच्छा का त्याग कर दे।

अतुः यह समूपूणत रूप से सवतस्व का त्याग है-ऐसा त्याग रािकुमार चसद्धाथत ने वन में एक तपस्वी बनने के चलए चकया था। ऐसा महान् त्याग राि भतृतहरर और राि गोपीन्द ने चकया था। उनके पास रािसत्ता थी। उन्ोंनें राज्यों ंपर शासन चकया। परन्तु उन्ें यह ज्ञान था चक परमात्मा ने उन्ें इस िरा पर ईश्वरानुभूचत प्राप्त करने हेतु भेिा था तथा इस चदव्य अनुभूचत को पाने के चलए ही भगवान् ने उन्ें मनुष्य-शरीर चदया था।

और उन्ोंनें कहा- "हम इस कायत िारा ईश्वरेच्छा को पूणत करेंगे, हम सब-कुछ त्याग देंगे।" और भगवान् ने उन्ें सब-कुछ दे चदया। सांसाररक वसुतुओं ंका त्याग करके उन्ोंनें उस शाश्वत आनन्द को प्राप्त

चकया िो अतुल्य है, ऐसी शाब्दन्त प्राप्त की िो बुब्दद्ध से अतीत है और उनें् अमर शाश्वत िीवन की प्राब्दप्त हुई।

अतुः भगवद्-प्राब्दप्त की चिज्ञासा के तथ्य को समझना और चविारना िाचहए। यह संसार के प्रचत नकारात्मक नहीं ंहै, िैसा चक कई लोग एक त्यागी को समझते हैं-तुम संसार से दूर िा रहे हो; दूर भाग रहे हो तुम इसकी और अन्य सैकडों ंमहिपूणत, अथतपूणत एवं श्रेि कायों की उपेक्षा कर रहे हो, यह ईश्वरेच्छा के चवपरीत है। िो इस प्रकार सोिते हैं, वे यह नहीं ंिानते चक यह त्याग वास्तव में परमात्मा की इच्छा की ही पूचतत है।

अतुः आलोिना तो सदा होती ही रहेगी। आप संसार और उसकी संकुचित दृचष्ट तथा चविारिारा को बदल नहीं ंसकते। उनें् वैसा ही रहने दें। उनें् शाब्दन्त प्राप्त हो। आप अपनी चदव्यता का अनुसरण करें। दैवी शब्दियााँ भी प्रसन्न होंगी। भगवान् स्वयं आपके कमत की सराहना करेंगे। वे आप पर अपनी अहेतुकी कृपा की वषात करेंगे। यही सत्य है।

अतुः हम सवतशब्दिमान् परम चपता परमात्मा से प्राथतना करते हैं चक वे हमें भगवद्-साक्षात्कार के इस गौरवाब्दित मागत पर िलते रहने के चलए शब्दि, साहस, सही दृचष्ट और दृढ़-संकल्प प्रदान करें। गुरुदेव की चशक्षा हमें इस परम अनुभव को प्राप्त करने में सहायता करे। भगवान् आप सबका मंगल करें!

३. सतत प्रयास और आकांक्षा िारा सफलता

िब आध्याब्दत्मक चिज्ञासु और सािक मागत-प्रशब्दस्त की इच्छा रखते हैं, िब वे अपनी कचिनाइयों ंऔर संशयों ंके चवषय में स्पष्टीकरण या कोई सम्मचत िाहते हैं, तो उनें् अब्दन्तम सम्मचत यही दी िाती है
"िो-कुछ आप कर रहे हैं, उसे करते रचहए; परन्तु उसे िीरे-िीरे बढ़ाते रचहए। उसे अचिक-से-अचिक कीचिए। अपनी सािना को बढ़ाइए और उसमें दृढ़ रचहए। यही उपाय है।"

असहनशीलता चकसी भी प्रकार सहायक नहीं ंहोती। चकसी भी यात्रा में आपको अपने थथान से गन्तव्य तक की दूरी तय करनी पडती है। यचद गन्तव्य तक शीघ्र पहुाँिने के इचु्छक हैं, तो आप अपनी गचत को थोडा और बढ़ाइए। इसके साथ ही, चितनी दूरी आप अभी तक तय करते रहे हैं, उससे अचिक दूरी तय कररए। यचद आप अभी तक चदन में छह घण्टे पैदल िल रहे हैं, तो अब सात या आि घण्टे चिलए। इस प्रकार एक यात्री अपने गन्तव्य तक शीघ्र पहुाँिने की इच्छा पूणत कर पायेगा।

इसी प्रकार आध्याब्दत्मक िीवन में सािक को अपनी सािना िीरे-िीरे बढ़ानी िाचहए और उसमें दृढ़ रहना िाचहए-िाहे वह िप, ध्यान, स्वाध्याय, प्रभु-वन्दना या अपने कततव्य-कमत के मध्य प्रभु को याद करना हो। चकसी भ्रम को अपने रासे्त की रुकावट मत बनने दीचिए। संशयों ंको वहीं ंरहने दीचिए, आप अपनी सािना और अचिक उत्साह के साथ करते िाइए। सामान्यतुः यह चिया स्वयं ही कई बार सने्देह दूर कर देती है। कुछ समय पूवत हम िो नहीं ंसमझ पा रहे थे, उसी बात को समझने लगते हैं और सािना में प्रगचतशील होते हैं।

आध्याब्दत्मक िीवन में सभी सफल होना िाहते हैं। यह स्वाभाचवक ही है। सािना में दृढ़ रह कर और उसका चनरन्तर चवकास करके हम सफलता प्राप्त कर सकते हैं। िो सािना आप कर रहे हैं, उसे करते रचहए और बढ़ाते िाइए। चनरन्तर अपनी सािना में चबना रुके बढ़ते रहना ही अब्दन्तम लक्ष्य तक पहुाँिने का सुचनचित मागत है। चदन-प्रचत-चदन उत्साहपूवतक अपनी सािना में वृब्दद्ध कीचिए। यही सफलता की कुंिी है। दृष्टान्तरूपेण प्रते्यक नदी चनरन्तर आगे बढ़ते रहने के कारण ही समुि में िा कर चमलती है। रासे्त मेंआनेवालीबािाओं ंकी परवाह न करते हुए वह आगे बढ़ती िाती है। हमारे पूवतिों ंने इसकी तुलना एक पात्रसेदूसरेपात्र में चगरने वाली तेल की िारा से की है। चिस प्रकार तैल-िारा सतत और अटूट होती है, उसीप्रकारहमारा आन्तररक आध्याब्दत्मक िीवन और सािना होनी िाचहए।

इसके साथ ही, अपनी इच्छा-शब्दि को अचि की भााँचत िीवन्त रब्दखए। चसद्धों ंऔर सन्तों ंने इस श्ेरि इच्छा के बारे में सामान्य सामाचिक िीवन में से चनत्य-प्रचत के उदाहरण दे कर बताया है। भगवान् से चमलने की आपकी इच्छा अगर इतनी तीव्र हो, चितनी एक चवश्वासघाचतनी पत्नी की अपने प्ेरेमी से चछप कर चमलने की होती है, या एक कृपण की तरह िो अपने िन को बढ़ाने के चलए चनरन्तर सोिता रहता है, या एक चवलासी पुरुष की भााँचत िो चदन-रात चवलाचसता में लीन रहता है, तब आप अवश्य भगवद्-प्राब्दप्त कर लेंगे। आपको भगवद्-साक्षात्कार हो िायेगा।

इसी आिार पर एक चसद्ध ने यह चवश्वास चदलाया - "अगर आपमें एक चवश्वासघाचतनी पत्नी, कंिूस और चवलासी पुरुष की चवलाचसता की भााँचत इच्छाओं ंकी तत्परता है-और चफर भी आप भगवद्-प्राब्दप्त नहीं ं करते, तो मैं उत्तरदायी हूाँ। मैं चनिी चवश्वास चदलाता हूाँ।" पूवत और पचिम के कई चसद्धों ंमें इसी प्रकार की इच्छा थी।

इन सब बातों ंका सार यह है चक हमें मन्दोत्साही नहीं ंहोना िाचहए। हमें पूणतरूपेण उसी इच्छा का साकार रूप बन िाना िाचहए। यही समूपूणत आध्याब्दत्मक िीवन तथा सािना का गहन सत्य है। एक सािक के हृदय में यही आन्तररक सन्तोष होना िाचहए।

हमें गहन मनन करना िाचहए और आकांक्षा, सतत प्रयास, भब्दि का िीवन और चसद्धिीवन के तथ्यों ंका अनुसरण करके लाभ उिाना िाचहए। प्रभु-कृपा और श्रदे्धेय गुरुदेव के आशीवातद हमें ऐसे चिज्ञासु सािक बनने के योग्य करें और इसी को एक कसौटी के रूप में अपने समक्ष रखने की सामथ्यत दें!

४. वास्तचवक सफलता क्या है?

सावतभौचमक चदव्य ति पराशब्दि को करबद्ध प्रणाम ि◌ो सभी व्यि नाम-रूपों ◌ंसे परे, श्रेिर, शाश्वत, असीम, नाम-रूप से अतीत और अचितीय है, पुनरचप समूपूणत है, चिसे पूणतत्व की प्राब्दप्त हेतु चकसी समूपूरक की और सहायता के चलए चकसी अन्य ति की आवश्यकता नहीं ◌ंहै।
इस ति की अचनवतिनीय पूणता के अचत-अल्प भाग से अनन्त अरब-खरब, दशपरित ब्रह्माण्ड प्रकट हुए हैं। उस सत्ता के अचत-सूक्ष्म भाग में इन अगचणत ब्रह्माण्डों ◌ंका उदय, चवकास और पुन: उसी में लय होता है। इसीचलए इसे अतीब्दिय कहा ि◌ाता है; क्योंचंक इसे ग्रहण करना या समझना मानवीय चिन्तन और तकत से परे है।

एक अत्यन्त प्रबुद्ध महान् व्यब्दि ने सबसे अिोयतिनक सत्य उद्घाचटत करते हुए कहा- "ि◌ीवो-ब्रहै्मैव नापरु:- तुम उस परम ति के अचतररि कुछ और नहीं ◌ंहो।" इस अचवश्वसनीय, अग्राह्य, अचिन्त्य सत्य को समझना और भी कचिन है। परन्तु इसे इतनी दृढ़ता, चवश्वास और चनिय के साथ कहा गया है चक यह हमें सोिने के चलए बाध्य कर देता है, क्योंचंक इसके पीछे चनिी आत्म-साक्षात्कार की शब्दि और बल है। इसीचलए इसमें इतना बल है।
उस परब्रह्म के साथ हमारी एकरूपता-'तत् त्वम् अचस' का उद्घोष मानव ि◌ीव ि◌ारा ि◌रती पर की गयी सबसे श्रेिर खोि है। यह मानव-अनुभव का सवोि गन्तव्य है। यह दशाती है चक मानवीय ि◌ेतना चकतनी ऊँिाई तक पहुँिने में समथत है और यह भी बताती है चक हम सबमें भी उस ऊँिाई तक पहुँिने की क्षमता चनचहत है। साथ ही यह सवोि रूप से अिोयतिचकत कर देने वाली और सन्तोषप्रदायक दोनों ◌ंही है, क्योंचंक यह हमें प्रेरणा देती है चक हम सफलता प्राप्त करने के चलए अपनी सारी शब्दि लगा दें।
सफलता क्या है? सिी सफलता क्या है? क्या इस प्राब्दप्त को हम सफलता कह सकते हैं? एक कहावत है चक यात्रा का उत्साह और हषत यात्रा करने में ही है, गन्तव्य तक पहुँिने में नहीं।◌ं गन्तव्य तक पहुँिने पर वह प्रचतचदन का रोमांि, सुख, उत्सुकता और उत्साह समाप्त हो ि◌ाता है।
इस ढंग से देखें तो यह दृचष्टकोण हमें उस कायत को करने के चलए उत्साह और उल्लास से भर देता है। कायत को समाप्त करने में उतना सुख नहीं ◌ंचमलता चितना कायत करते रहने में चमलता है। कायत पूणत होने का अपना सन्तोष हो सकता है; परन्तु कायत-चसब्दद्ध के दौरान प्रचतचदन के सुख से इसकी तुलना नहीं ◌ं की ि◌ा सकती।
इस नूतन दृचष्टकोण के अनुसार-सफलता ि◌ीवन के उस परम लक्ष्य को प्राप्त करने के चलए स्वयं को पूणतरूपेण आनन्दपूवतक समचपत करना है। वह स्वयं में ही सफलता है। यचद आप इस महान् यात्रा को प्रारम्भ कर सकते हैं, तो पूणता और मोक्ष के मागत पर ि◌लें, ि◌लते रहें-अपने अब्दस्तत्व की समस्त शब्दियों ◌ंके साथ-अन्त तक अपनी समग्र शब्दि के साथ तब तक लगे रहें–ब तक आप गौरवशाली सफलता नहीं ◌ंप्राप्त कर लेते। इसमें कोई सन्ेदेह नहीं ◌ंहै। स्वचगतक लोक की सारी प्रशंसा आपकी है। देवता प्रसन्न होते हैं और परमात्मा चनिय ही कृपा, प्रेम और सन्तोष की दृचष्ट से देखते हैं-"मेरा यह पुत्र सुयोग्य है। इसने मेरे ि◌ारा चदये गये उपहार का योग्यतापूवतक प्रयोग चकया है, यह मेरा कहलाये ि◌ाने के योग्य है।"

आपका ि◌ीवन इस प्रकार का होना ि◌ाचहए। परम चपता परमात्मा हमें आशीवातद दें! परम पूज्य गुरुदेव का श्रेितम आशीवातद हमारे ि◌ीवन को इस प्रकार का बनाये !

५. सुख का महत्व

उस परम, शाश्वत और अनन्त, काल और बन्धन-रचहत सत्ता को श्रद्धा-सचहत प्रणाम–ि◌ो ज्ञानातीत है, चिसकी अचिन्त्य, अचनवतिनीय और अलौचकक मचहमा मन और वाणी की अिोयतिनक शब्दि से परे है।
उसकी चदव्य कृपा हम पर सदा रहे!

परम पूज्य सद्गुरुदेव श्री स्वामी चशवानन्द ि◌ी महारि को सादर अचभनन्दन, चिन्होंनें अपने प्रकाशमय व्यब्दित्व, उज्ज्वल आभा-मण्डल और ि◌मकती आँखों ◌ंसे हमें उस परम सत्ता के स्वरूप की ुिलिी-सी छचव चदखायी, चिसकी अनुभूचत में वे दृढ़तापूवतक प्रचतचित थे। वे चदव्यता के प्रकाश से प्रचतभाचसत थे।उस सवातीत की ओर की इस परम यात्रा में उनकी कृपा सदा हमारे ऊपर बनी रहे !

हमने इस परम गन्तव्य तक पहुाँिने के रोमांि, आध्याब्दत्मक साहसपूणत कायत के हषत और यात्रा की िीति की और बताया चक हषत और उत्साह गन्तव्य तक पहुाँिने में उतना नहीं, ं चितना उस परम लक्ष्य तक पहुाँिने के ऊर्ध्तगामी प्रयास में है। यात्रा करते रहने में ही सुख है।

परन्तु यह मात्र कहने के ढंग की ही बात नहीं, ं अचपतु आवश्यक भी है। यह अचनवायत और महिपूणत भी है; क्योंचंक यचद आपको चकसी कायत में वास्तचवक सुख और प्रसन्नता नहीं ंचमलती, तो आप उसे उत्साहपूवतक नहीं ंकर सकते और उस कायत के चलए हृदय और मन से पूणतरूपेण समचपत नहीं ंहो सकते। उस कायत के चलए आपकी लगन और कायत करने की चवचि अिूरे मन की ही होगी।

वास्तचवक सुख और आनन्द के अभाव में आप अपनी समूपूणत शब्दि, क्षमता और सामथ्यत को एकाग्र नहीं ंकर पायेंगे। यह आपके िीवन का एक अंश होगा, न चक समूपूणत िीवन। उस परम लक्ष्य की प्राब्दप्त के चलए, आप समग्रतापूवतक नहीं ंलग सकेंगे। अतः यह आपके िीवन का एक अंश-मात्र रहेगा िो इस श्ेरि कायत में संलम है, िब चक दूसरा अंश चकसी दूसरे कायत में लगा है।

परन्तु यह केवल एक श्ेरि कायत मात्र ही नहीं ंहै। यह इतना अचिक श्ेरि है चक आप अपने अिंश से इसे कायातब्दित नहीं ंकर सकते। यह िीवन का वह चवलक्षण आयाम है िो पूणतत्व हेतु आपके समूपूणत िीवन की समस्त शब्दियााँ, पूणत समय, पररपूणत बल, ध्यान और पररश्रम की अपेक्षा करता है। यचद इस अिेषण के चलए आप पूणत रूप से समचपत हैं, तो आप आश्वस्त हो सकते हैं चक भगवान् इसी प्रकार के समचपत सािक, चिज्ञासु और भि को पूणतरूपेण वरण करेंगे। सभी महान् व्यब्दियों ंका यही अनुभव रहा है। चवचवि प्रकार से उन्ोंने हमें यह बताने का प्रयास चकया है।

अपने सवाांचगक अब्दस्तत्व, हृदय, मन और आत्मा का पूणतरूपेण समपतण तभी सम्भव है, िब आपको उससे आनन्द की अनुभूचत हो। यचद यह कायत आपको परम उत्साह, प्रसन्नता और आन्तररक हषत से भर देता है, तभी यह पूणत समपतण–िो अत्यन्त आवश्यक है- सम्भव है।

अतः यह आनन्द का महि है। भगवद्-साक्षात्त्कार के इस कचिन कायत में स्वयं को लगाये रखना आवश्यक है। आत्मानुभूचत प्राप्त करने के चलए यह प्रबुद्धता और प्रकाशपूणत कायत, यह अनुभवातीत, दुष्कर कायत करना परम आवश्यक है। यही सत्य है। परमात्मा और सद्गुरुदेव इस सत्य का दशतन और परम लक्ष्य की प्राब्दप्त में सफलता हेतु हमारी सहायता करें! भगवान् आप सब पर कृपा करें!

६. कचिनाइयों ंके प्रचत एक चभन्न दृचष्टकोण

कभी-कभी चिज्ञासु अपने-आपसे प्रश्न करते हैं- "ऐसा क्यों ंहै चक एक आध्याब्दत्मक सािक अनेक कचिनाइयों, ं रुकावटों, ं बािाओं ंऔर अनेक ऐसी उलझन-भरी पररब्दथथचतयों ंसे ग्रचसत हो िाता है, िो ऐसे सामान्य मनुष्य के िीवन में नहीं ंचदखायी देतीं ंिो अपने लौचकक व्यवसाय पर िा रहा है? उसे आयकर के सम्बन्ध में या अपने पुत्र को अच्छे चवद्यालय में प्रवेश कराने में कचिनाइयााँ हो सकती हैं; परन्तु अपने वास्तचवक िीवन में उसे उन गहन आन्तररक समस्याओं ंका सामना नहीं ंकरना पडता।"

मूल रूप से इसका उत्तर यही है चक आध्याब्दत्मक िीवन सामान्य िीवन से हट कर है। यह अन्तर िीक उसी प्रकार से है िैसे एक व्यब्दि तो गहन िल में उतर कर उसी िारा के प्रवाह की ओर आगे बढ़ता िाता है और अन्य व्यब्दि प्रवाह के चवपरीत िलता है। स्वाभाचवक रूप से िो व्यब्दि िारा के प्रवाह के चवपरीत ऊर्ध्तगमन करता है, उसे अचिक कचिनाई का सामना करना पडता है, िब चक वह व्यब्दि िो िारा के साथ चनम्न चदशा में अग्रसर होता है, उसे कम प्रयास करना पडता है। वह अल्प प्रयास में िल के वेग से ही आगे बढ़ िाता है। स्पष्ट है, हमारी समस्याओं ंका यही कारण है।

आपने अपने चलए एक महान् लक्ष्य चनिातररत चकया है और उस लक्ष्य तक सुगमतापूवतक पहुाँिने के चलए एक मागत है-ऐसी महान् चवभूचतयों ंके पद-चिह्ों ंपर िलना िो पहले ही अपने लक्ष्य को प्राप्त कर िुके हैं। उन्ोंने इसी मागत का अनुसरण चकया है और ऐसा ही िीवन यापन चकया है, अनेकों ंसमस्याओं ंका सामना करके ही अपने लक्ष्य को प्राप्त चकया है। चिस प्रकार सभी बािाओं ंको पार करके उन्ोंने अपने लक्ष्य की प्राब्दप्त की, उन्ीं ंपद-चिह्ों ंके अनुयायी बनें। अतः सन्तों ंके िीवन पर चिन्तन करें। अपने आदशत

के रूप में उन्ें अपने समक्ष रखें, उनके िीवन से प्ेरेरणा प्राप्त करें और उनके आध्याब्दत्मक ज्ञान और चशक्षण से मागतदशतन भी प्राप्त करें। उन्ोंनें अपने िीवन को एक आदशत रूप में रखा है। अपनी व्यब्दिगत चशक्षाओं ंऔर उपदेशों ंिारा बहुमूल्य संकेत-सूिक थथाचपत चकये हैं। इस प्रकार हम सन्तों ंके िीवन से लाभाब्दित हो सकते हैं। अतुः इस पथ पर अग्रसर होने के चलए एक चववेकपूणत मागत है-चकसी आदशत सन्त के िीवन को प्ेरेरणा-स्रोत मानना और उनसे प्ेरेरणा प्राप्त करना।

कोई गहन समस्या िो हमारे मागत में बािक प्रतीत होती है, उसे सुलझाने का चितीय उपाय है चक हम उसके प्रचत अपना दृचष्टकोण पररवचतत कर लें और कहें-"नहीं, ं यह कोई समस्या नहीं ंहै। यह पररब्दथथचत मेरे चलए आवश्यक है। भगवान् मेरी वास्तचवक ब्दथथचत से पररचित हैं। मैं कहाँ पहुँिा हूँ, यह वे िानते हैं। आध्याब्दत्मक चवकास के इस चबन्दु पर आत्मज्ञान-प्राब्दप्त हेतु मुझे इसी आन्तररक शब्दि की आवश्यकता है और आगे बढ़ने के चलए भी इसी की आवश्यकता है।"

अतुः समस्या के प्रचत यह एक अन्य दृचष्टकोण है चक इसका स्वागत करें। "यह मेरे चलए आवश्यक है, इसीचलए ऐसा हुआ है, अन्यथा ऐसा नहीं ंहोता। यचद मैं चवकास के उितर स्तर पर पहुँि िाऊँ, तब यह पररब्दथथचत नहीं ंआयेगी; क्योंचक तब मैं इससे परे िा िुका होऊँगा। तब मुझे इसकी आवश्यकता नहीं ं रहेगी।"

अतुःअबहमसमस्याकोसमस्यानमानकरआन्तररकिीवन,आभ्यन्तरसािनाऔरअभ्यास तथा वैराग्यिाराहमनेिोकुछभीसीखाहैऔरअबतकचितनाभीअन्तुःकरणकाचवकासचकयाहै, उसकी अचभव्यब्दिकासौभाग्यअथवाअवसरमानतेहैं।अबहमेंिीवन-क्ेषेत्रमेंइसकापरीक्षणकरनाहै। इस प्रकारवहपररब्दथथचतऔरवहप्रतीतहोनेवालीसमस्याहमेंस्व-परीक्षणकरनेकाअवसरप्रदानकरती है चक हमनेचकतनीप्रगचतकीहै।हमेंइसेएकिुनौतीके रूपमेंलेनाहैचकहमनेअबतकिो-कुछभी प्राप्त चकयाहै,उसमेंहमपूणतरूपेणब्दथथतहैं-हमरेतकीनींवपरनहीं, ंप्रत्युतिट्टानपरखडेहैं।

अतुःप्रत्ेयेकवस्तुब्दथथचतकोरिनात्मक,सकारात्मकऔरसृिनात्मकभावसेग्रहणकरें।आध्याब्दत्मक िीवनमेंआगेबढ़नेऔरअपनेउत्साहकोबनायेरखनेकायहीमागतहै।इनपररब्दथथचतयों ंकाआन्तररक मूल्यपहिानें,यहिानलेंचकयेमहिपूणतऔरआवश्यकहैंऔरइनसेहमउपलब्दिप्राप्तकरसकतेहैं। परमात्मा हम सब पर कृ पा करें!

७. संसार हमारा शत्रु नहीं ंहै !

हमारा लक्ष्य अचितीय परम सत्ता से एक होना है, यद्यचप हम बाह्य सांसाररक िीवन में अपना आध्याब्दत्मक िीवन यापन करते हैं। अतुः हमें केवल आन्तररक आध्याब्दत्मक िगत् में ही नहीं,ं प्रतुयुत् उस बाह्य आध्याब्दत्मक आयाम में भी कायत करना पडता है िो थथूल, भौचतक, ऐब्दिय चवषयों ंआचद अनेक रूपों ंमें हमारे समक्ष अचभव्यब्दि है।

असमान प्रतीत होते इन दोनों ंपक्षों ंमें हमें इन दोनों ंके बिी के सामंस्यि और पारस्पररक प्रभाव पर ध्यान देने की आवश्यकता है। क्या हम इन दोनों ंको िीवन में नकारात्मक रूप में अथवा नूयूनता के रूप में सहन करें या इनें् दूसरे दृचष्टकोण से समझें? क्या हम इनें् इस तरह से समझें, प्रयोग में लायें और इनसे लाभ उियें चक िैतभाव होने पर भी दोनों ंके मध्य कोई चवररिी चिभिान नहीं ंहै ?

क्या प्रकृचत इस सम्बन्ध में हमारा मागत प्रशस्त कर सकती है अथवा कुछ दे सकती है? क्या यह सहायक हो सकती है? िहााँ चिचवि ति हों,ं क्या वहााँ चवररिाभास अपररहायत है या चिचवि ति दो अित भाग हैं िो अन्त में एक में पररणत हो िाते हैं -क्या वे एक-दूसरे के पूरक और पूणता प्रदान करने वाले हैं? वास्तचवक ब्दथथचत क्या है?

भगवद्गीता में यह बताया गया है चक हम तीनों ंगुणों ंमें बरतते हैं; क्योंचंक हम वैचश्वक प्रकृचत में हैं और प्रकृचत तीन गुणों ंसे बनी है। अतुः वे हमारे िीवन का भाग हैं। 'सि' गुण मनुष्य को ऊर्ध्तगामी बनाता है, 'रिस्' सम-स्तर पर रखता है और 'तमस्' मनुष्य को अिोगचत की ओर ले िाता है। यद्यचप ये एक-दूसरे के चवपरीत प्रतीत होते हैं; परनुतु हमें यह बताया गया है चक तीनों ंगुण आवश्यक हैं और प्रते्येक का तकतसंगत, यथाथत कायत है। ये अचनवायत हैं।

यचद हम प्रकृचत की ओर ध्यान से देखें, तो हम देखते हैं चक एक वृक्ष िरती पर खडा होने में इसीचलए सक्षम है; क्योंचंक उसकी िडें चमट्टी में गहरी हैं। साथ ही िडें भी िरती को दृढ़तापूवतक और शब्दिशाली रूप से पकडने में प्रवृत्त होती हैं। िडें ढााँिा तैयार करती हैं, िब चक िरती वृक्ष को शब्दि के साथ खडा रखती है।

हम अनेक वसुतुओं ंके संसार से चघरे हुए हैं। क्या वे आवश्यक हैं? क्या वे अनावश्यक हैं? क्या वे हमारे आध्याब्दत्मक चवकास की बािाएाँ हैं? वास्तव में वे हैं क्या ? यचद वे अनावश्यक होतीं,ं तो भगवान् उनें् वहााँ रखते ही नहीं।ं अगर वे आवश्यक हैं, तो उनका कोई कारण होगा। उनका उदे्देश्य क्या है? हमारी आध्याब्दत्मक प्रगचत को रोकना तथा दुःखद समस्या और बािा बन कर समक्ष आना? हमें इस पर गहन चविार करना िाचहए और इस चिन्तन से लाभ उिाना िाचहए।

कभी-कभी चवररिात्मक प्रतीत होते ति भी अथतपूणत होते हैं। वे हमारे भीतर कुछ क्षमताएाँ, कुछ चनिय और दृढ़ िारणा िागृत करते हैं, िैसे-"मुझे इस पर चनचित रूप से चवियी होना होगा।" वे आपके समक्ष एक िुनौती प्रसुतुत करते हैं और आपको अपनी बुब्दद्धमत्ता चदखानी है चक आप चकस प्रकार उस िुनौती का सामना करते हैं और उस पर चविय प्राप्त करते हैं। ये तथ्य हमारे अन्तुःकरण में अनेक सकारात्मक प्रचियाएाँ घचटत करते हैं। हम उसे एक िुनौती के रूप में स्वीकार करते हैं; अपनी बुब्दद्ध का प्रयोग करके सोिते हैं-"हम इसे कैसे वश में करें?" वे हमारे भीतर दृढ़-प्रचतज्ञता और चनिय की भावना िागृत करते हैं-"मुझे अवश्यमेव इससे चनबटना है।"
अतुः ये अनेक वसुतुओं ंके आभ्यन्तर पे्ररक हैं िो इनके अभाव में पे्ररणरत नहीं ंहो सकतीं।ं हम चनष्प्रभ और नीरस होते। अतुः हमारे अन्तुःकरण के पे्ररक होने के कारण यह सवतुः नकारात्मक नहीं ंहो सकते। इनका सकारात्मक और रिनात्मक उदे्देश्य है िो मात्र पारस्पररकता से बढ़ कर उससे परे है। इनका प्रयोिन सकारात्मक है।

पतवार के चबना नाव िल नहीं ंसकती। नाव के चबना पतवार व्यथत है; उसका कोई प्रयोग नहीं ंहै। िब दोनों ंसाथ हों,ं तभी नदी पार करने में सहायक हो सकते हैं। ऊपर और नीी की दन्तावली परस्पर युद्ध करने के चलए नहीं ंहै। भोिन को िीक प्रकार से िबाने के चलए दोनों ंकी आवश्यकता है। अपने िीवन, पदाथों और अन्तुः- बाह्य के तथ्यों ंके प्रचत हमारा यही दृचष्टकोण होना िाचहए। परमात्मा सवतज्ञ हैं। वे भूल नहीं ंकर सकते।

अन्य सभी प्राणी-वगत, िाहे चितने भी शब्दिशाली, गचतशील और समथत हों,ं मागत में आगे बढ़ते हुए कोई बािा आते ही अपनी चदशा पररवचतत कर लेते हैं। केवल मनुष्य चविार करता है चक उस बािा को कैसे पार चकया िाये। वह अपनी चदशा नहीं ंबदलता, वरन् अपनी ऊर्ध्वगामी यात्रा पर गचतशील रहता है। यचद कोई नदी मागत में आती है, तो उसे पार करने के चलए वह उस पर पुल बनाता है। यचद पवत रेल-मागत की बािा बनता है, तो मनुष्य उसमें सुरंग बना देता है। कदाचित् यह हमें चशक्षा प्रदान करता है। केवल मनुष्य ही ऐसा करता है, कोई और प्राणी नहीं ंकर सकता।

अतुः सभी पदाथत आवश्यकतानुसार प्रदान चकये गये हैं। वे हमें परखते हैं और हमारी परीक्षा लेते हैं चक हम कहाँ तक सिे हैं? हम कहाँ तक दृढ़ चनियी है? हमारी महिाकांक्षाएँ चकस प्रकार की हैं? चकतनी संसार हमारा शत्रुु नहीं ंहै। सिी, यथाथत और प्रमाचणत हैं? अतुः ये आवश्यक हैं। वे हमारे समक्ष िुनौती रखते हैं। वे हमें अपने आध्याब्दत्मक िीवन का आकलन करने का मागत दशाते हैं। इस प्रकार वे हमारी अथतपूणत प्रगचत में योगदान करते हैं।

यचद हम इन्हें इस प्रकार समझना आरम्भ करके इस दृचष्टकोण से देखें, तो इनके प्रचत हमारी प्रचतचिया भी बदल िायेगी। िब ये नकारात्मक भावनाएँ हमें अशान्त करेंगी, तो हम शीघ्र चनराश नहीं ंहोंगें, न अियतिचकत होंगें और न ही प्रगचतशील होने की सम्भावना पर सन्देह करेंगे। िब हम इनकी आवश्यकता पर चविार करेंगे, तो हम सरलतापूवतक आत्म-चवश्वास नहीं ंखोयेंगे और न ही चनराश होंगें। ये हमारी परीक्षा लेने और हमें प्रचशचक्षत करने आती हैं। हमारे भीतर चछपी सुप्त शब्दियों ंको िागृत करने आती हैं। ये िुनौचतयाँ हैं।

इस प्रकार देखने से एक नवीन दृचष्टकोण आपके समक्ष आता है। आप उसे बुब्दद्धमत्तापूवतक अपनाते हैं। उनके प्रचत सभी प्रचतचियाएँ सकारात्मक हो िाती हैं। सािना और आध्याब्दत्मक िीवन के अचतररि आपके सम्पूणत िीवन का नये ढंग और स्वभाव में नवीनीकरण हो िाता है। चफर इनकी प्रचतचिया नकारात्मक नहीं ंहोती। इनका रूप सकारात्मक हो िाता है-"भगवान् ने ये पररब्दथथचतयाँ भेिी हैं; ये आवश्यक हैं। मुझे समझना िाचहए चक मैं इनका चकस प्रकार उपयोग करके इनसे लाभ उिा सकता हूँ।"

यह सम्पूणत प्रचिया अचवश्वास अथवा शंका या उिेग या असुरक्षा और सन्देह से भरी नहीं ंहै। यह पूणतया सकारात्मक और चववेक-सम्पन्न है। यह चनमातण और संरिना करने वाली है और अग्रसर होने की प्रचिया है। चिस संसार में रहते हुए हमें अपनी आध्याब्दत्मक 'सािना' का चवस्तार करना है, उसे इसी दृचष्ट से देखना िाचहए। तब हम संसार को एक शत्रुु के रूप में नहीं,ं प्रत्युत् एक सवतथा पृथक् रूप में देखेंगे।

परन्तु शास्त्रों ंने चवपरीत बात क्यों ंकही है? उन्होंने इसे माया, िाल और बन्धन बताया है। उनके अनुसार यह एक िंगल है िहाँ आप भटक िायेंगे, यह एक िाल है चिसमें आप फँस िायेंगे। इसका कारण है। यहाँ हमें साविानी और ध्यानपूवतक िलने के चलए कहा गया है। बस, यही बात है। क्योंचक यचद आप बुब्दद्धमान् और अनुभवी नहीं ंहैं, तो अनुभव और चववेक के अभाव में आप उनको बन्धन बना सकते हैं। ऐसा नहीं ंहै चक वे बन्धन-युि हैं। वे हमें केवल यह बताना िाहते हैं-"यहाँ अमूल्य वस्तुुएँ हैं; परन्तु यचद आप उनसे िीक प्रकार का व्यवहार नहीं ंकरेंगे, तो वे बन्धन बन सकती हैं। अत: अपनी आँखें खोलें, साविानी और ध्यानपूवतक आगे बढ़ें।"

िब मानवता उद्भव के चनम्नतर स्तर पर थी और बुब्दद्धमत्ता चवकचसत नहीं ंहुई थी, तब कदाचित् इस नकारात्मकता का चित्रण करना आवश्यक था; परन्तु अब इसकी आवश्यकता नहीं ंहै। इसके अवशेष यचद हम इस िीवन में भी बनाये रखते हैं, तो वह इस कारण से चक हम िीवन-क्षेत्र में साहसपूवतक आगे बढ़ते हुए साविान रहें। अपने आध्याब्दत्मक िीवन को िीने में इतना ध्यान रखना हमारे चलए अच्छा है। इस संसार और इसकी वस्तुुओं ंको अपनी आध्याब्दत्मक चशक्षा और प्रचशक्षण का अंग बनाते समय इतना ध्यान तो हमें रखना ही है।

यही उपाय है संसार में व्यवहार करने का, चिससे यह हमारा शतुरु अथवा बाािा न बने और हम परस्पर सकारात्मक भाव बना कर चवचवि पदाथों के उचित उपभोग िारा लाभाब्दित हों। परमात्मा की कृपा और गुरुदेव का आशीवातद हमें इस प्रज्ञापूणत कायत को करने में सक्षम बनायें चिससे हमारा कल्याण हो! भगवान् की कृपा हम सब पर हो!

८. मानवीय पररब्दथथचत में परमात्मा की चवद्यमानता

उस परम, सावतभौचमक, चदव्य सत्ता को सादर नमन, िो इस समय यहााँ है और इस पावन समाचि-थथान में गुरुदेव की आध्याब्दत्मक सचन्नचि में चमचश्रत हो रही है। गुरुदेव की आध्याब्दत्मकता यहााँ है; क्योंचक चिस नश्वर देह में उन्होंनें आिुचनक संसार में आध्याब्दत्मक पुनिीवन लाने हेतु वास चकया, वही देह पूणत सम्मान के साथ यहााँ रखी गयी है। परम सावतभौचमक सत्ता यहााँ चवद्यमान है; क्योंचक अनुभवातीत होते हुए भी यह अत्यन्त सापेक्ष और व्यब्दिगत है। इसकी अनुभवातीतता, सवतव्यापकता और अन्तरथथ चवद्यमानता के रहस्य को अत्यन्त उि आध्याब्दत्मक अनुभूचत और बोि प्राप्त हुए सन्तों ने उद्घाचटत चकया है।

अतुः हम एक ही समय में दो रूपों में चवद्यमान हैं-आध्याब्दत्मक और चदव्य। इसी पररपेक्ष्य में हमें देखना है चक हमारे आध्याब्दत्मक चवकास का सािन और उपलब्दि तथा मानवीय समस्याओं का समािान इसी सत्य में चनचहत है। एक उपाय है-इस सत्य के प्रचत िागरूक रहें, तब आप िहााँ भी रहेंगे, आपका अनुभव भगवद्-अनुभव रहेगा। आप कहीं भी हों, चकसी भी अवथथा, पररवेश या पररब्दथथचत में हों, उसी में आप परमात्मा का साचन्नध्य अनुभव करेंगे।

अतुः भगवद्-उपब्दथथचत का यह अभ्यास आपके चलए भगवद्-ध्यान में चवकास का माध्यम बन िायेगा िो अन्ततुः भगवद्-साक्षात्कार में पररणत हो िायेगा। साथ ही, यह सत्य मनुष्य की समस्याओं के चलए भी उपाय दशाता है। मनुष्य की समस्या यह है चक परमात्मा ने उसे अपने साथ वातातलाप करने का िो अन्तुःकरण-रूपी थथान प्रदान चकया है, उसे वह इस पररवततनशील िगत् के चवचवि प्रकार के चविारों से आिान्त रखता है। चिन महापुरुषों ने उस भावातीत सत्ता को अनुभव चकया है, उन्होंनें यह बताया है- "अवसाद में न रहें। स्वयं को दुःखी न करें। बाह्य चवक्षेप और चवघ्नों के तथाकचथत आिमण के मध्य एक सतत चवद्यमान, सतत देदीप्यमान अचल चदव्यता का केि है। सब प्रकार के चवक्षेपों के मध्य, चवचभन्न चमचश्रत चविारों के मध्य यह केि में कूटथथ रूप से चवराचित है।"

प्रत्येक श्वास के साथ इस अचल सत्य, इस आन्तररक वास्तचवकता और परमात्मा की उपब्दथथचत में सदा वास करने का आपने अभ्यास करना है। तब संसार में रहते हुए भी आप सदा भगवान् में ही वास

करेंगे। चनरन्तर पररवचतत होती पररब्दथथचत और अनुभव, िो चक आपके लौचकक िीवन का अचनवायत अंग हैं, के मध्य में आपकी आन्तररक वास्तचवकता के रूप में यह अपररवततनशील, अप्रभाचवत सत्य चवद्यमान है।

इस पर प्रचतचदन सिैत हो कर ध्यान करना आध्याब्दत्मक सिाना और आध्याब्दत्मक िीवन का प्रमुख अंग है। सतं्संग, स्वाध्याय और स्मरण इसमें अत्यन्त सहायक हैं-"मैं तुममें हूँ। तुम मुझमें हो।" यह सत्य है। अन्य पदाथत पररवततनशील हो सकते हैं। वे बदलते रहते हैं। उनमें पररवततन होता रहता है। बाह्य िगत् की असंख्य पररवततनशील गचतचवचियों ंके मध्य यही अपररवततनशील सत्ता है।

इस सत्य का मनन करें। इसका अभ्यास करें और अपनी कचिनाइयों ंके चलए उपाय स्वयं खिों। सफलता अवश्यम्भावी है; क्योंचंक भगवान् ने आपको अपनी छचव में बनाया है िो सफल होने के चलए है, असफल होने के चलए नहीं।ं यह िन्मचसद्ध चवशेष अचिकार सवतकाल में सभी मनुष्यों ंकी चवरासत है; क्योंचंक सभी भगवान् की प्रचतच्छाया है।

यह मनुष्य की चवलक्षणता है; परन्तु यह सभी की चवरासत है। यचद आपने इसे प्राप्त चकया है, तो इसचलए नहीं ंचक आप चवशेष हैं। इसका कारण आपका अनिूापन है िो आपमें और अन्य मनुष्यों ंमें भी है। आप भगवान् की दृचष्ट में उतूकृष्ट हैं; परन्तु आपको यह नहीं ंसिोना िाचहए चक आप ही चवशेष हैं। यचद आप चवशेष हैं, तो अन्य सभी व्यब्दि भी चवशेष हैं।

अतु: हमें नम्र और सरल बनना िाचहए। चबना बात के अपना महि नहीं ंबढ़ाना िाचहए, क्योंचंक हम बहुत महिपूणत नहीं ंहैं। हम महिपूणत हैं; क्योंचंक अन्य मनुष्य महिपूणत हैं, चकसी चवशेष रूप में नहीं।ं अतु: चवलक्षण और चवशेष के बिी का सूक्ष्म अन्तर स्पष्ट रूप से समझना िाचहए। चवशेष हमें अहंकारी बना सकता है, िब चक चवलक्षणता हमें नम्र बनाती है। चवलक्षणता में अहंकार का भय-सिूक संकेत चनचहत नहीं ं है।

अतु: मानवीय िरातल पर हमें इस सत्य का अभ्यास करना है चक व्यब्दिगत कचिन पररब्दथथचत में भी भगवान् चवरिमान हैं। हमें इस यथाथत सत्य को अपना किे-चबन्दु बनाना है। मनुष्य की समस्याओं ंकी अपेक्षा हमें इस पर अचिक बल देना है। अपने अब्दस्तत्व में इसको अचिक महि देना है। तब सब िीक हो िायेगा। िब आप भगवान् को किे बना लेंगे, तो अन्य पदाथत स्वाभाचवक रूप से उसकी पररचि में आ िायेंगे-क्योंचंक किे केवल एक ही है।

अतु: ईश्वर की चवद्यमानता के अनुभव में सदा प्रचतचित रहने का यह उपाय है। इसे अपने िीवन का मुख्य किे बनायें। तब सब-कुछ स्वतु: ही अपने थथान पर ब्दथथत हो िायेगा। प्रभु-कृपा और गुरुदेव का स्नेहपूणत आशीष हमें इस सत्याचभमुख अन्तुःब्दथथचत और मानचसक अवथथा को प्राप्त करने में समथत करे!

९ अपररमेय शब्दि के स्रोत को पकडें

मनुष्य–न्म उितर मिहाकाक्षाएँ, महान् व्यब्दियों ंसे सम्पकत की लालसा और उनके प्ेरेरक, आध्याब्दत्मक सन्ेदेशों ंको आत्मसात् करना-यह सब आपकी सम्पचत्त है। आपका सौभाग्य इन्ीं ंगुणों ंसे है। इन गुणों ंके अभाव में रहने वाले लोगों ंकी अपेक्षा आप चवशेष रूप से िन्य हैं।

मनुष्य–न्म ले कर भी असंख्य लोग ऐसा िीवन व्यतीत करते हैं चिसमें उनकी मानवीय क्षमता न तो पूरी तरह से पहिान में आती है, न उसका िोषण होता है और न ही कोई उपयोग। व्यथत के चवचवि चियाकलापों ंमें वह क्षमता क्षीण हो िाती है। उसका कोई उपयोग नहीं ंहो पाता। इस प्रकार, िनवान् होते हुए भी ऐसे लोग चनितन हैं। महान् सौभाग्यशाली होते हुए भी वे प्राचणयों ंमें अत्यन्त भाग्यहीन हैं; क्योंचंक वे अपनी क्षमता और सौभाग्य को पहिान सकने तथा उसका उपयोग करने में असफल हैं।

तथाचप, अपने सौभाग्य की पहिान करते हुए आओ, हम देखें चक चनमातण के क्ेषेत्र में हम क्या कर सकते हैं, सकारात्मक कायत कैसे कर सकते हैं िो ऐसे शब्दि-स्रोत का चनमातण करे, चिससे हम वैभव प्राप्त कर सकें? यह स्रोत एक दुगतवत् हो चिसमें से प्रगचतशील ऊितस्पद िीवन का प्राणप्रद िल प्राप्त हो। शब्दि के ऐसे स्रोत-चनमातण के चलए हम क्या कर सकते हैं? िो हम कर सकते हैं, उन सबका सचवस्तार चनरूपण करना सम्भव नहीं ंहै; चकनुतु उनमें से कुछ का वणतन करना ही उस ओर चनदेश कर देगा।

कल्याण उसी व्यब्दि का होता है िो अ ाँिेरे रास्तों ंको त्याग कर प्रकाश-पथ की ओर िलने का स्वभाव बना लेता है। संक्ेषेप में, आशावादी बनें। कभी यह मत कहें चक आप अमुक कायत नहीं ंकर सकते। ऐसा कभी मत कहें चक यह सम्भव नहीं ंहै। यह भी कभी न करें-"मुझ नरिाम के चलए ऐसा नहीं ंहो सकता।"

आप कौन हैं यह कहने वाले चक आपके साथ क्या घचटत हो सकता है और क्या नहीं? िब चक आपसे भी ऊपर एक उितर सत्ता, शब्दि चवद्यमान है िो सभी प्राचणयों ंकी देखभाल करती है और उनका िीवन संचिलत करती है। इस चनणतय तक छलांग लगा कर पहुाँिने वाले आप कौन हैं, मानो चक उसकी सवतव्यापकता में आपने एक झरोखा बना चलया हो? आप उिथथान लेने का प्रयास कर रहे हैं- "वह (परमात्मा) सब-कुछ िानता है। मैं िानता हूाँ, वह क्या िानता है।"

यह एक इस प्रकार की मानचसकता है चिसके िारा हम स्वयं अपने शतु्रु हो िाते हैं। ऐसे चिन्तन की अपेक्षा सकारात्मक क्यों ंनहीं ंबनते ? ऐसा क्यों ंनहीं ंकह सकते-मेरे चवकास हेतु सब हो रहा है। मुझे चवश्वास है, इसी में मेरा कल्याण है। क्यों? क्योंचंक मैं िानता हूाँ चक परमात्मा सवतकल्याण-स्वरूप है। मैं कैसे िानता हूाँ? सभी सन्त-महात्माओं ंका यही किन है। सभी ज्ञानी महापुरुषों ंने ऐसा ही कहा है। चवश्व-भर के िमतग्रन्ों ंने ऐसा कहा है। वह सवतमंगलमय है, परमानन्द है, महान् है, मचहमा-मब्दण्डत है। उसमें कुछ भी नकारात्मक नहीं ंहै।"

युगों–युगों ंसे िरती को अपने िीवन और उपदेशों ंसे िन्य करने वाले सैकडों–सहस्रों ंऋचषयों ंने उसका गुणगान चकया है। इन महान् पुरुषों ंने पराशब्दि की सु्तुचत सुस्पष्ट रूप में की है चिसमें कोरी भावुकता नहीं ंहै, उस परम सत्ता से सम्बब्दन्धत अपने व्यब्दिगत अनुभव के आिार पर उन्ोंनें परमात्मा की सु्तुचत की है। अतुः हम पूणत चवश्वास कर सकते हैं चक वह परम सत्ता पररपूणत आनन्दस्वरूप, सवतमंगलमय और कल्याणकारी है। "अतुः मैं सवतथा सही और सुरचक्षत रहूाँगा यचद मैं इस िारणा को आिार मान कर िीवन की गचतचवचियों ंको आगे बढ़ाऊाँगा।"

बुब्दद्धमान् पुरुष अतीत से मुि रहता है, अतीत का चिन्तन नहीं ंकरता। वह अतीत को लोहे की गेंद से िुडी हुई लोहे की शृंरृंखला (िंिीर) नहीं ंमानता-"एक इंि भी आगे बढ़ने के चलए मेरे पास कोई आशा नहीं ंहै। मैं िहााँ हूाँ, वहीं ंपर अवसाद में मरने के चलए अचभशप्त हूाँ।" यह चविाररिारा एक चनषेिात्मक प्रवृचत्त वाले चनराशावादी की है चिसने हार मान ली है। वह सब ओर समस्याएाँ ही देखता है। उसे यह ज्ञान नहीं ंहै चक समस्या यहीं ंपर है। हमने स्वयं को ही एक गम्भीर समस्या बना चलया है और वह समस्या है आत्म-समस्या।

इसचलए आत्म-सृचित अज्ञान अन्धकार का यह बन्धन काटें और आशावाद की प्रकाशमयी ज्योचत के सूयत की ओर ऊर्ध्वगामी उिउडान भरें। ईसाई मत िारा चनचदतष्ट गुणों–िैसे आथथा, आशा और पे्रम-में आशा एक गुण है। आशा का उद्भव आथथा से भी है। चनराशावाद से आशावाद में, नकारात्मकता से सकारात्मकता में स्वयं को पररवचतत करने में और इस आशावाद के रसास्वादन से आप अत्यचिक लाभाब्दित होंगें, चिससे सवोतृकृष्ट प्राब्दप्त, प्रगचत, सफलता, ऊर्ध्वगमन हेतु आपके चलए िार खुल िायेंगे।

प्राणायाम से भी पयातप्त शब्दि चमलती है। दीघतश्वसन और प्राणायाम शरीर को बचलि बनाते हैं। सूयत के समय बाहर भ्रमण को िायें। शीतल हवा के झोंकें अपने मुख पर पडने दें। प्रचतचदन दीघत श्वास-प्रश्वास की यह चिया खुली िूप और हवा में करें। शारीररक और मानचसक रूप से लाभ लेने के साथ ही आपके भीतर शब्दि का संचार होगा। खुली िूप और हवा में बाहर िाने पर आपके भाव अब नकारात्मक नहीं ं रहेंगे, आपका मन बदल िाता है। िारों ंचदशाओं ंसे अबाि पररदृश्य पूणत चवसूतृत थथल पर िा कर मन भी संकुचित अवथथा को त्याग कर असीम, चवसूतृत, चवशाल भाव को प्राप्त होता है। ऊपर दृचष्ट उठा कर, उि साम्राज्य की ओर चनहारें। आप पूणतरूपेण लाभाब्दित होंगें।

अतु: प्रचतचदन चनयचमत रूप से प्राणायाम का अभ्यास करें। आपके िारों ंओर चवकीणत अनन्त, अपररमेय, असीम, अव्यय वैश्व प्राण से चवपुल शब्दि संहृत कर के प्राणायाम शरीर के कोशों ंऔर नस-नाचडयों ंको शब्दि प्रदान करता है; क्योंचंक हमारे िारों ंओर, सवतत्र असीम वैचश्वक शब्दि प्रवाचहत होती रहती है।

हम वैचश्वक शब्दि के एक चवशाल क्षेत्र में चनवास कर रहे हैं; क्योंचंक यह सब माँ शब्दि की ही अचभव्यब्दि है। प्रकृचत शब्दि की ही अचभव्यब्दि है; अतु: सवतत्र बाहुल्य, अक्षय, कभी समाप्त न होने वाली शब्दि का संचय है चिसमें हम रहते हैं, गचत करते हैं और स्व-अब्दस्तत्व रखते हैं। यह सब िानते हुए, प्राणायाम के िारा, सकारात्मक आदेशों ंका सृिन करें और अनुभव करें चक चसर के ऊपरी भाग से ले कर पााँव की उँगचलयों ंके नख-पयतन्त प्रतेयेक कोश नया हो रहा है, सि से भरपूर हो रहा है, पररवचतत हो रहा है, बचलि हो रहा है और िीवन प्राप्त कर रहा है।

इस प्रकार, चदन-प्रचत-चदन, आप उस संिीविनी शब्दि से भरपूर होते िायेंगे। यह शब्दि सृचित-चिया नहीं ंहै, प्रतुयुत् यह असृचित-स्वाभाचवक प्रचिया है। शब्दि का सृिन नहीं ंहोता। यह तो शाश्वत है, अक्षय है। यह शारीररक, मानचसक, स्नायचवक और मनोवैज्ञाचनक रूप से आपको पुनरुज्जीचवत कर सकती है, आपका कायाकल्प कर सकती है। फेफडे, हृदय, रि-संचार, श्वास-प्रचिया आचद, पूणत रूप से रस-पररवततन की प्रचिया िारा शरीर में नयी सूफूचतत प्रदान करना प्राणायाम का कायत है। हम अनन्त-अक्षय सम्पचत्त में ऐसे चवलोल कर रहे हैं चक कचनचिका उठा कर इसे स्पशत करने की आवश्यकता भी नहीं ंलगती। यह इतनी समीप है-शब्दि, प्रकाश और िीवन की यह अक्षय सम्पदा !

तो आओ, हम िनवान् होते हुए भी चभखारी न बने रहें, सौभाग्यशाली होते हुए भी दुभातग्य की कल्पना न करते रहें। हम इस चवपुलता, शब्दि के चवशाल भण्डार और कोष के उत्तराचिकारी हैं। हम उत्तराचिकारी हैं, हमारा अचिकार है, िन्मचसद्ध अचिकार है। यह एक तथ्य है। इस क्षण आपकी ब्दथथचत की यही वास्तचवकता है। इसे पहिानें और िन्य हो िायें। परमात्मा और गुरुदेव का आशीवातद हमें प्राप्त हो। हम कभी रुकें नहीं।ं इस सािना को चनरन्तर करते रहें। अतु: हे प्रभु, मेरी सहायता करो! ऐसा ही हो!

१०. सदा आशावादी बनें!

गुरुदेव अपने चदव्य प्रविनों ामें एक चप्रय सूब्दि कहते हैं और लेखों ामें चलखते हैं- "कभी चनराश
मत होओ, कभी चनराश मत होओ।" एक कचव ने एक बार कहा - "मनुष्य के सीने से एक आशा सदा ही प्रवाचहत होती है।" एक अन्य कचव ने कहा- "शोकाकुल ढंग से मुझे मत बताओ चक िीवन एक चनस्सार स्वप्न है।" आप यहााँ पुरुषाथत करके प्राब्दप्त करने आये हैं। पुरुषाथत करें। भीतर से दृढ़ और ईश्वर में चवश्वास
रखें। "भीतर हृदय, ऊपर ईश्वर।" शब्दिवान् बनें। दृढ़ संकल्प करें और अचवरत श्रम करते िलें। ऐसा करेंगे
तो भगवान् आपकी सहायता करेंगे। 'भीतर हृदय, ऊपर ईश्वर' का यही अथत है। हृदय में उचित भाव रखें और सतत प्रयास करते रहें। श्रम करने पर ही ईश्वर की ओर से सहायता आयेगी।

िीवन के दो पथ हैं। एक है आशंका से पूणत, चवश्वास का अभाव और नकारात्मकता- "मैं नहीं ा
सिोता, मैं यह कर सकता हूाँ। यह बहुत कचिन है। मैं कहााँ कर सकता हूाँ?" दूसरा पथ है- "मैं कर
सकता हूाँ। मैं कर सकता हूाँ अथवा नहीं,ा चबना प्रयास के मैं यह कैसे कह सकता हूाँ? प्रयास करने पर ही
बता पाऊाँगा चक कर सकता हूाँ अथवा नहीं?ा" अतः पहले ही चनणतय ले लेना चक मैं नहीं ाकर सकता, उचित
नहीं ाहै। यह चववेकहीनता है- "मुझे पहले प्रयास कर लेने दो। मैं पूणत प्रयास करूाँगा।" अपना पूणत प्रयास
कर लेने पर यचद आप सफल नहीं ाहोते लक्ष्य-प्राब्दप्त में, तो मैं आश्वासन देता हूाँ चक आप असफल नहीं ा
हुए। सफलता आपकी न हो; परन्तु आप सफल हैं। आपने मनुष्य का कततव्य पूणत चकया है।

क्योंचक आप ईश्वर की प्रचतकृचत हैं; अतः आप नकारात्मकता की गिरी नहीं ाहैं। ईश्वर वह सब है
िो सकारात्मक है, शुभ है, कल्याणमय है, अच्छा है, सुन्दर है। ईश्वर में चकसी प्रकार की नकारात्मकता
नहीं ाहै। और आप उसकी प्रचतकृचत हैं। आपमें सकारात्मकता की पूणत शक्यता है, सामथ्यत है। अपनी चदव्य
प्रकृचत को चमथ्या प्रमाचणत मत करें। प्रत्येक सोपान पर, सब कायों में आपका िीवन आपकी चदव्य प्रकृचत
को प्रचतभाचसत और प्रमाचणत करे!

अतः िीवन के प्रचत सदा आशावादी भाव अपनायें। सकारात्मक बनें, नकारात्मक नहीं।ा िीवन के
प्रचत आशावादी रुख की िारणा करें और अपने दैचनक िीवन में आशावादी वृचत्त अपना कर आगे बढ़ते
िलें, चनराशावादी नहीं।ा तभी आपका मन कचव के उस कथन की ब्दथथचत में आयेगा-"भीतर हृदय, ऊपर
ईश्वर।"

ऐसे ही हृदय के चलए हमें प्रभु से प्राथतना करनी िाचहए- "मुझे पूणत चवश्वास है चक आप मेरे
चनदेशक बनेंगे, आपकी कृपा मेरा पथ प्रशस्त करने वाली शब्दि होगी और चदन-प्रचत-चदन मेरे िीवन को
प्रकाचशत करेगी। अतः आपकी सहायता से ऐसा कुछ नहीं,ा िो मैं न कर सकूाँ। आपकी सहायता से, हे

भगवन्, मेरे चलए सब-कु छ सम्भव है। चनचित रूप से मैं आपकी सहायता लूंगा; क्योंचंक आप कृ पालु हैं। आप पे्रेमस्वरूप हैं, दयालु हैं। सिे सिाक पर अपनी कृ पा-वृचष्ट करने को आप सदा उद्यत रहते हैं। मुझे
चवश्वास हो गया है। मैं प्रयास करूूँ गा। इस चवश्वास के साथ पुरुषाथत करूूँ गा चक िहााँ मुझे आपकी
आवश्यकता होगी, वहााँ आपमेरी सहायता करेंगे।"

अतुः एक सिा सिाक िीवन के प्रचत दो भावों– आशावादी और चनराशावादी, दो उपगमनों–
आशावादी और चनराशावादी, िीवन के प्रचत दो प्रकार के दृचष्टकोणों– आशावादी और चनराशावादी में से
आशावादी दृचष्टकोण को ही अपनाता है, िो उचित भी है। अनुचित नकारात्मक अथवा चनराशावादी भाव का
वह त्यागकरदेताहै।

आशा एक चदव्य गुण है। संकल्प एक चदव्य गुण है। यह शब्दि की अचभव्यब्दि है। इसचलए हमारा
कततव्य है अपने प्रचत और परमात्मा के प्रचत अपनी अन्तरात्मा को आशावादी ब्दथथचत में रखें। सभी वस्तुओं के
प्रचत सकारात्मक दृचष्टकोण रखना हमारा कततव्य है। िीवन के प्रचत यही दृचष्टकोण रखें। हमारा कततव्य है चक िीवन और कमत के प्रचत हृदय में सकारात्मक भावनाएूँ बनाये रखने का प्रयास करें। यही उचित भाव है।
इसे अपना लें, स्वीकार कर लें। इसी से िीवन में सफलता प्राप्त होगी।

११. तुम 'वहीं' हो

चप्रय सिाक वृन्द ! आप सब चकसी वसुतु की चिज्ञासा कर रहे हैं, चकसी के प्रचत समचपत हैं और सब एक ही आत्यब्दन्तक लक्ष्य को समक्ष रख कर कुछ अभ्यास भी कर रहे हैं। आभ्यन्तर लक्ष्य सबका एक ही है। वह है चदव्यानुभूचत, ईश्वरानुभूचत, परब्रह्म का साक्षात्कार, आप िो हैं उसी की अनुभूचत-आतमनुभूचत ।

लौचकक दशतन और सभी महामण्डलेश्वर कहते हैं 'चक उसकी प्राब्दप्त में संसार एक बािा है। चवषय-पदाथों का आकषतण मोह–िाल है। चववेक-शून्य िीवात्मा अपनी ही इच्छाओं ंके बन्धन में आ कर दास बन िाता है और ये आकषतण उसे बचहमुतखी बना कर अपनी लपेट में ले लेते हैं। िीवात्मा असहाय है; क्योंचंक वह मायाि–ाल में फाँस गया है।' ऐसा वे कहते हैं और हम भी उसे पूणत चवश्वास के साथ मान लेते हैं।

सामान्य पथ-गामी यचद यह प्रविन सुन ले और यह कहते हुए इसे ग्रहण कर ले चक 'हम असहाय हैं, माया का अचतिमण दुष्कर है, हम इससे ऊपर नहीं ंउि सकते', तो इसका अचभप्राय है चक वह व्यब्दि सुगमता से िोखे में आ िाता है। इससे अच्छा वह िानता ही नहीं।ं चकनुतु, क्या आप और अच्छा नहीं ंिानते ? क्या आप भी इसी भाँचत िोखे में आ िाते हैं? क्या आप भी इस चविार और चसद्धान्त को मानते हैं? यचद आप भी यही सब ग्रहण कर रहे हैं, तो मायाि–ाल में फाँसे लोगों ंऔर आपमें क्या अन्तर है? वषों का पररत्याग और गंगा-तट के एकान्त आपके चकस काम आये ?

अतु: हमें अन्तर चदखाना है। पुस्तकों ंमें, िमतग्रन्ों ंमें ऐसा चलखा हो, महामण्डलेश्वरों ंके प्रविनों ंमें भी यही क्यों ंन हो, हमारा ज्ञान और अच्छा होना िाचहए। और अच्छा, सत्य हमारे चलए प्रकट हो िुका है; चकनुतु इसे आप तभी िान पायेंगे िब यथाथत चविार-चवश्लेषण करेंगे। उचित आत्म-परीक्षण से आप स्वतु: ही प्रकाश प्राप्त करेंगे और ऐसी अनेक वसुतुएँ प्रकट होंगी चिन्ें आप पहले नहीं ंिानते थे। अनेक सत्य आपके समक्ष प्रकट होंगें।

तब अकस्मात् ही आपमें एक नया कौशल िागृत होगा, एक नवीन क्षमता का चवकास होगा, एक योग्यता आयेगी यह िानने की, चक परम लक्ष्य तक पहुँिने में बािा क्या है और अनुकूलता क्या है! यह भी ज्ञान होगा, चक आपने चकसे आह्लादपूवतक स्वीकार करना है और िीवन का अंग बनाना है तथा चकसे उखाड कर दूर फेंकना है, दूर हटा देना है, भले ही वह आपके वततमान िीवन का चहस्सा हो-"नहीं,ं नहीं,ं अब मुझे अचिक अच्छी प्रकार ज्ञात हो गया है। अब मैं इसे रहने नहीं ंदूंगा। यह तो एक ऐसी बािा है िो मुझमें ही है। मैं इसे दूर कर दूँगा।"

अतु: यह चववेक-दृचष्ट चक आध्याब्दत्मक िीवन में क्या अपेचक्षत और क्या उपेचक्षत है और इसका सतत ध्यान रखते हुए न करने योग्य कायत की उपेक्षा और करने योग्य कायत का सतत अभ्यास करते हुए आगे बढ़ना ही बुब्दद्धमान् और िागृत सिाक का लक्षण है। चिस सत्य की खोि में आप भटक रहे हैं, उसे प्राप्त करने के चलए चववेक और आत्म-परीक्षण आवश्यक हैं, सहायक है।

एक महापुरुष ने एक ही बार में एक महान् उद्‌घोषणा िारा इस समस्या को सुलझा चदया। उन्ोंनें कहा चक हमारी चिन्तन-प्रणाली ही हमारे चलए सबसे बडी बािा है, हमारी समस्या है। इनका अब्दस्तत्व एक भ्रम ही है, तथाचप हम चनरन्तर इनसे संघषत करते रहते हैं। आत्म-चनरीक्षण और चववेक के अभाव में हम इसे भयावह बना देते हैं। इसके पास िो शब्दि नहीं ंहै, वह इसे दे कर हमने इसे महिपूणत बना चदया है- "हटाओ इस मूखता को। यह दुिेय नहीं ंहै। तुम मुि हो, इससे ऊपर हो, इससे अप्रभाचवत हो।"

उस महान् आिायत ने एक उत्कृष्ट युब्दि बतायी-"कोई बािा नहीं ंहै। बािा का अब्दस्तत्व ही नहीं ंहै। तुम तो पहले से ही 'वही' हो, िो तुम स्वयं को बनाने की चिज्ञासा कर रहे हो। इस भ्रम को दूर करो चक तुम 'वही' हो। तुम 'वही चदव्य पूणतत्व' हो, चिसे तुम खोि रहे हो। लक्ष्य यहीं ंहै। उसके पास नहीं ं िाना है, उसे प्राप्त नहीं ंकरना है, प्रतुयुत् उसका तो बोि करना है।"

चवचित्र रूप से संचक्षप्त, सार रूप में अद्‌भुत उब्दि उस महापुरुष ने इस प्रकार कही चक इसे बताने के चलए मुझे अचिक शब्दों ंकी आवश्यकता नहीं ंहै। आिे श्लोक में मैं इसकी व्याख्या कर सकता हूँ- "ब्रह्म सत्यं िगब्दन्मथ्या िीवो-ब्रह्मैव नापरः।" यह तथाकचथत चवश्व चिसे तुम सत्य मान रहे हो, वास्तव में चमथ्या है। ब्रह्म सत्य है। एक वही िोस सत्य और तथ्य है और वह है सब्दिदानन्द ब्रह्म, अिैत सत्य, चनत्य, शाश्वत, अपररवततनशील, एकरूप वास्तचवकता। केवल वही वास्तचवकता है और तुम उससे पृथक् नहीं ंहो। तुम्हारी उस शाश्वत, चदव्य, पूणत सत्ता पर कुछ काल्पचनक अचभवृचत्तयाँ िुडी हुई हैं।

'इसेदूरकरो।चिसक्षणतुमइनअचभवृचत्तयों ं कोदूरकरोगे,उसीक्षण तुम अपने वास्तचवक स्वरूपकोप्राप्तकरलोगे।तुम्हेंअबकुछबननानहीं ंहै।पूवतुःहीतुमवहीहो।' इस पर बल देते हुए
उसमहापुरुषनेकहा-"तुम'वही'हो,केवलवहीहो।"चकतनामहान्सत्य!मोक्षप्रदायक सत्य! अद्भुत
रूप से शब्दि प्रदान करने वाला सत्य!

अतुःयहएकयुब्दिहीैअभीआपकेहाथमेंहै।यहआपकीहै।इस चनयम को अपना लें।
बिाा,बिाानहीं ंरहेगी;बन्धन,बन्धननहीं ंरहेगा।आपअनुभवकरेंगेचकचनत्य-मुि अवथथा में आप
आनन्दमेंहैं।**ब्रह्म सत्ंयं जगन्मिथ्या जीवो-ब्रहै्मैव नापरः।"**यहीसत्यहै,यहीतथ्य है। यह सत्य तत्काल
मोक्षप्रदानकरनेवालासत्यहैचिसतकआपकागमन(पहुाँ)भीअचिरेणसम्भव है। इसका बिो करें
और मोक्ष प्राप्त करें!

१२. हमारे और ब्रह्म के मध्य अन्तराल नहीं ंहै

ज्योचतमतय आत्मन् ! सवतत्र चवद्यमान चदव्य सत्ता आपकी सतत सहयोगी बने िो आपके समीपतम से भी समीपतम है, आपके प्रते्येक कोश में चवराचित है और चवश्व की हर वसु्तु में चिसका वास है! मन,
विन और कमत तथा िीवन को नया मोड देने वाली अदृश्य शब्दि का सहयोग आपकी िागृचत बनाये रखे !

उसकी सशि चदव्य, प्रभावपूणत चमत्रता, अपनी चनकटतम-सचन्नचि की ऊिात से आपके चविारों ंको
उतृ्कष्टता प्रदान करे! वह आपको अच्छा चिन्तनशील बनाये, आपके हृदय में अचे्छे भावों ंको संश्रय दे, ऐसी
मिुर वाणी बोलने योग्य बनाये िो आश्वासनात्मक और शाब्दन्तप्रद हो! आपके मुख से चनुःसृत शि एकता,
भातृभाव, प्रसन्नता, शाब्दन्त और प्रकाश फैलाने वाले हों,ं इसके चवपरीत न हों।ं सब प्रकार से सकारात्मक
और चनमातणात्मक हों,ं नकारात्मक और चवस्फोटक न हों।ं

सहि रूप से आपके स्वभाव में ये गुण हों।ं सदा एकरस, अिल, अपररवततनशील ईश्वर का पे्ररक
और चदव्य साथ आपको चनरन्तर प्राप्त है, तो स्वाभाचवक रूप से आपकी प्रकृचत भी वही होना सरल है।
इतना पयातप्त नहीं ंहै चक आप संसार के साथ हैं। इतना भी पयातप्त नहीं ंहै चक संसार आपके साथ है। सत्य
तो यह है चक उससे भी दश गुणा अचिक, सहस्र गुणा अचिक आप उस चदव्य सत्ता में संब्दथथत हैं। आपका
वास, गमन और अब्दस्तत्व उसी चदव्यता में है। वह सतत आपके साथ है। अन्दर भी और बाहर भी वही है।
चदखाता बचहि तत्सवत व्याप्य नारायणुः ब्दथथतुः (बाहर-भीतर व्याप्त हो कर वही नारायण ब्दथथत है)।" िागरूक
रहें। इस पर मन एकाग्र करें। भगवान् कृष्ण कहते हैं- **"समं सवेषु भूतेषु डतष्ठन्ंतं परमेश्वरम्। भगवान
वैडवनश्यन्ंतं यः पश्यडत स पश्यडत।"** (िो मनुष्य समान रूप से सब प्राचणयों ंमें उस परमेश्वर को, उस
अचवनाशी को नश्वर में देखता है, वास्तव में वही देखता है।)

इसी कारण से आपको अन्तदृतचष्ट का चवकास करना है, इस भौचतक शरीर की बाह्य भौचतक दृचष्ट का
नहीं।ं वह आपका वास्तचवक आत्म-ति नहीं ंहै। बिो दृचष्ट नहीं ंहै। वह तो केवल चमथ्या, पररवततनशील,

नश्वर, क्षचणक और अचनत्य वसुतु का दशतन करती है। यह असत् का दशतन करती है। **"यत् दृश्ंयं तद् नश्यम्"**ि◌ो दृश्य है, वह नश्वर है। अतुः यह दृचष्ट आपकी सहायक नहीं ◌ंहै।

अचवरत रूप से ि◌ष्टा और दृश्य का चववेक बनाये रखें। केवल ि◌ष्टा ही सत्य है, दृश्य तो ि◌ाती बहार है। चनत्य, शाश्वत, सत्य स्वरूप के दशतन करना आपकी आभ्यन्तर दृचष्ट का कायत है। आपकी अन्तदृतचष्ट ज्ञान से प्रकाचशत है-उस ज्ञान से ि◌ो ऋचषयों–मुचनयों ◌ंके साचन्नध्य से प्राप्त हुआ है, आध्याब्दत्मक ग्रन्ों ◌ंसे प्राप्त हुआ है और अद्भुत अमूल्य सांसूकृचतक पैतृक सम्पचत्त के रूप में प्राप्त हुआ है।

अतुः आपके ि◌ीवन का उदे्देश्य यही होना ि◌ाचहए चक अन्तदृतचष्ट से सत्य को ि◌ानें। सत्य का दशतन चनरन्तर अन्तुःकरण में ही होना ि◌ाचहए। इस सत्य का दशतन करते हुए इस बात के चलए सिेत रहें चक आप चनरन्तर ईश्वर के साचन्नध्य में हैं। इसीचलए वह चनकटतम, सवातचिक समीप और अन्तरंग हमारे और ब्रह्म के मध्य अन्तराल नहीं ◌ंहै शब्दि, बल और प्रभाव है- "मैं ि◌ब इस प्रकार से रह रहा हूँ और चियाशील हूँ, तो उसी की सतत सचन्नचि में ही मैं सब-कुछ कर रहा हूँ।

"मैं अन्धकार में गचत नहीं ◌ंकर सकता। मैं सदा प्रकाश में ही रहूंगा; क्योंचंक सब भााँचत के अन्धकारों ◌ंसे परे, ज्योचतयों ◌ंकी ज्योचत परम ज्योचत परमेश्वर मेरे साथ है। उसमें रह कर मेरे चलए अन्धकार कहााँ? मैं तो प्रकाश में वास करता हूँ, प्रकाश में घूमता हूँ। बाहर-भीतर प्रकाश ही मुझमें भरा है। अतुः मुझसे बाहर आने वाली प्रते्येक वसुतु भी उसी गुण का स्वरूप होगी।" ज्योचत-स्वरूप परमेश्वर आप सब पर ऐसी ही कृपा-वृचष्ट करें!

पूज्य गुरुदेव स्वामी चशवानन्द ि◌ी महारिा को पे्रेमपूणत नमन है ि◌ो इस महान् तथ्य को पुनुः-पुनुः कहने में कभी पररश्रान्त नहीं ◌ंहुए चक 'ईश्वर तुम्हारे भीतर चनचहत है।' वे कहते थे- "यह छोटा-सा 'अहं' ीि भीतर चनचहत परमेश्वर के दशतन में बािा है, दूर होना ि◌ाचहए।" इसी की अत्यचिक आवश्यकता है। यही सािना है। 'अहं' को मारो। ि◌ीने के चलए मृतुयु का वरण करो।

अहंभाव के अब्दस्तत्व में आप बाह्य भौचतक चनरपेक्ष ि◌गत् में उिेगपूणत, अथथायी, चमथ्या ि◌ीवन व्यतीत करते हैं। आपने अभी वास्तचवक, सत्य, मौचलक तथ्यों ◌ंसे पूणत ि◌ीवन प्रारम्भ नहीं ◌ंचकया है। अतुः गुरुदेव कहते हैं-"वास्तचवक ि◌ीवन स्वाभाचवक रूप से ही चदव्य है; क्योंचंक वसुतुतुः तुम भी चदव्य हो।" चदव्यता तुम्हारी वास्तचवक पहिान है, तुम्हारा स्वरूप है। तथाचप ि◌ब तक वह अवथथा नहीं ◌ंआती, तुम्हारी गचतचवचियों ◌ंको चियाब्दित करने वाली ऊिात उसमें प्रचतचित नहीं ◌ंहै। उसकी उपेक्षा हो रही है। वह सो रही है और यह चमथ्या 'अहं' अपने कें िीय थथान में रह कर इब्दियों ◌ंके पााँ घोडों ◌ंका चनयामक बना हुआ है। इनके आगे झुक रहा है और इन्ें चियाशील रखे हुए है। इस चनयामक को बाहर ि◌केल कर सत्य को कें ि में थथाचपत होना ि◌ाचहए।

एवंचवि उन्ोंनें कहा- "इस अहं को मारो। ि◌ीने के चलए मरो। चदव्य ि◌ीवन यापन करो।" इस 'अहं' की मृतुयु के उपरान्त ही आप ि◌ीचवत बाहर आ सकते हैं। इसका बोि करें चक केवल वही अब्दस्तत्व में है। ऐसा पररवततन आने पर आप और अचिक चितीय-तृतीय स्तर में नहीं ◌ंरह ि◌ाते, थथूल और भौचतक नहीं ◌ंरहते। अब आप आध्याब्दत्मक हो गये हैं। आपका ि◌ीवन चदव्य हो गया है। ि◌ीवन सत्य-स्वरूप हो गया है। आपका ि◌ीवन अन्तचनतचहत सत्य की अचभव्यब्दि हो गया है।

अतुः आयें, परब्रह्म की सतत, तत्काल, चनकटतम घचनिता में ि◌ागृत हों।◌ं इस लक्ष्य के चलए चकसी यात्रा की आवश्यकता नहीं ◌ंहै। यात्रा तो गन्ता और गन्तव्य के मध्य की दूरी के कारण होती है। यहााँ दूरी नहीं ◌ंहै; अतुः तत्काल ि◌ागृत होना है। आपमें और वास्तचवकता में कोई अन्तराल नहीं ◌ंहै। ऐक्य भाव में आप दोनों ◌ंब्दथथत हैं। सुप्रीम ताओवाद में- यह ि◌ागृचत का सहि पथ है चिसमें दो अिंत एक पूणत इकाई बनाते हैं।

परमात्मा आपको ि◌ागृचत की यह अवथथा प्रदान करें। गुरुिनों ◌ंि◌ारा दशातया गया यह पथ पूणतरूपेण हमारा पथ प्रशस्त करे, ताचक हम सत्य की ि◌ागरूकता को प्राप्त कर सकें। हम आभ्यन्तर यात्रा कर रहे हैं, बाह्य नहीं ◌ंऐसा आिायों का कथन है। गुरुदेव ने कहा- "ध्यान ि◌ारा साक्षात्कार करो।" ध्यान एक आन्तररक प्रचिया है ि◌हााँ हम मन, बुब्दद्ध की ि◌ागृत अवथथा को प्राप्त कर लेते हैं। यही ि◌ागृत अवथथा सवतदा चवद्यमान सत्ता के साक्षात्कार का सािन बन ि◌ाती है। सावतभौचमक सत्ता और परम चप्रय गुरुदेव आपको चनत्य-प्राप्त, आपकी अपनी इस रहस्यमयी सािना में पूणत सफलता प्रदान करें। यह एक चवरोिाभासी रहस्य है चक आप एक ऐसी वसुतु को खोि रहे हैं, चिसे खोिने की आवश्यकता ही नहीं ◌ंहै। उस वसुतु को खोि

रहे हैं, चिसका कभी अभाव नहीं ंथा, िो कभी खोयी नहीं ंथी। सदा वततमान वसुतु की खिो कर रहे हैं, खिोने की आवश्यकता कहााँ है ?

बि आपको आभास हो गया चक खिोने की आवश्यकता नहीं ंहै, तो आप लक्ष्य तक पहुाँच ही गये हैं।आपने अपनी चनयचत का लेख पूणत कर चलया है। िब यह ज्ञान हो गया है चक खिो व्यथत है, अनावश्यक है, मूखता है, तो आप वही हैं। ऐसी कृपा-वृचष्ट आप सब पर हो, यही प्राथतना है।

ॐ

गुरुके आदेशों ंकाअनुपालनकरनेसेदैवीकृपाप्राप्तहोतीहै।अहेतुकीहोतेहुएभीयह कृ पा-वृचष्ट उस पर होती है िो स्वयं को योग्य अचिकारी बना लेता है।

लिकीप्रकृचतबहनाहै।यहचबनाचकसीशततकेबहताहै।िहााँ-कहीं ंकोईगड्डा(गतत)आये, उसे भरदेताहै।िहााँ-कहीं ंऊाँचाईआिाये,उसके ऊपरसेबहताहै;यद्यचपइसकास्वाभाचवक तात्काचलक स्वभाव उसके चवपरीत है।

ऐसे ही दैवी कृ पा का चनयम है। िहााँ अहंभाव का अभाव है, िो आपके भीतर गुरु के आदेशों ं का पालनकरतेहुएसेवाभावऔरनम्रतासेअंकुररतहुआहै,नम्रहृदयकीउसचनम्नदशामेंईश्वरीय कृपा काबहावस्वाभाचवकऔरतत्कालहोताहै।“स्वयंकोररिकरो,मैंतुम्हेंभरदूाँगा।"

आपदेखतेहैंचकिीवनमेंगुरुकेआदेशों ंकेअनुपालनकोहमिोथथानदेतेहैं,उसकेऔर प्रभु-कृपाकेमध्यआध्याचत्मकसम्बन्धहै।यचदहमारािीवनगुरुकीचशक्षाकेअनुरूपहै,तोचनचित रूप से हम दैवी कृ पा के अचिकारी बन िाते हैं।